अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की समस्याएं तथा प्रौद्यौगिकी की भूमिका

श्रीमती नीरू ठाकुर
सह आचार्या व हिन्दी विभागाध्यक्ष,
राजकीय महाविद्यालय ज्वाली, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्यौगिकी के युग के रूप में जाना जाता है। ''सूचना'' जिसका संग्रहण , संरक्षण एवं उसी अनुरूप अनुसरण कर मानव सभ्यता विकसित हो रही है। अब प्रश्न यह उठता है कि सूचना का संग्रहण में भाषा कहां तक सहायक है और उस सूचना के सफल सम्प्रेशण में अनुवाद व तकनीक के मेल से कितनी सफलता प्राप्त की जा सकती है?

आदिकाल से जब से मनुष्य ने अपने भावों को अभिव्यक्त करना आरम्भ किया होगा तब उसने किन्ही ध्वनियों के सहयोग से इस कार्य को पूर्ण किया होगा जो कालान्तर में भिन्न भाषाओं के रूप में विकसित हुई। ऐसा लगता है जैसे कि भाषा विकास ही कालान्तर में लिपी के विकास का कारक सिद्ध हुआ है । लिखित साहित्य के परिणाम स्वरूप ज्ञान एवं भाक्तिका साहित्य तब से अब तक उत्तरोत्तर विकास पाता गया। भौगोलिक भिन्नता से उत्पन्न भाषाई अन्तर मनुष्य की ज्ञान पिपासा में बाधा न बन सके। मनुष्य ने अनुवाद के माध्यम से इस बाधा पर विजय पाई।

अनुवाद, एक ऐसी प्रक्रिया जिसके माध्यम से एक भाषा में कही गई बात को आसनी से किसी अन्य भाषा में अभिव्यक्त किया जा सकता है । हम जानते हैं कि जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है वह स्रोत भाषा और जिसमें अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है। अनुवादक को स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा का समग्र ज्ञान तथा संस्कृतिक समझ हाना एक अनिवार्यता हैं आज की हिन्दी भाषा का जन्म भी तो संस्कृत से हुआ है । यह तो हम सब को ज्ञात है कि किस प्रकार हिन्दी ने पाली, प्राकृत,अपभ्रंश के विभिन्न पड़ावों को पार कर करीब 1000 वर्षों की लम्बी यात्रा कर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया है। हिन्दी भाषा का शब्द भंडार न केवल भारतीय भाषाओं बल्कि विदेशी भाषाओं से संजीवनी प्राप्त करता है।

किसी भी क्षेत्र की सभ्यता व संस्कृति को जानने का सरल साधन उसका साहित्य हो सकता है । यदि विद्वान हिन्दी भाषा में विश्व साहित्य को अनुदित करने का भगीरथी कार्य कर पाएं तो वैश्विक ग्राम की वसुदैव कुटुम्ब की अवस्थाए सत्य हो जाएगी। हम भावनात्मक स्तर परपरस्पर आसानी से जुड़ पाएंगे। जहां प्रौद्योगिकी ने भौतिक दूरी कम की है वहां भाषाई निकटता इसे बनाए रख सकती है । इस कार्य को पूर्ण करने में अनुवाद एक मात्र साधन है।

अनुवाद सरल कार्य नहीं है कारण यह कि किसी भी भाषा के मुहावरे को सही से समझे बिना यह कार्य असंभव है। अनुवादक को सावधानी पूर्वक यह कार्य करना होता है ताकि वह सही और सटीक अर्थों के साथ उस अनुवाद के साथ न्याय करे। उदाहरण के लिए एक आपबीती आपके साथ सांझा करती हूँ- 'हरियाणा के झझर क्षेत्र के पास हम सवारी का इंतज़ार कर रहे थे मेरी एक मित्र हमारे दूसरे मित्र से पूछती है,'' शर्माजी, जे बूट कहां ते पाड़े सैं?'' अब चौंकने की बारी मेरी थी क्योंकि मुझे 'बूट' अंग्रेजी के शब्द का अर्थ 'जूता' ही पता था और 'पाड़े' पंजाबी भाषा के अनुसार 'फटे होना' के अर्थ में पता था। जब जूते देखे तो वे नए थे कहीं से भी फटे न थे। मैंने अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए अपनी सहयोगी से पूछ ही लिया तो ज्ञात हुआ कि शर्मा जी खेत से हरे चने यानी बूट के पौधे उखाड यानी पाड़ कर लाए थे ।' यह प्रसंग इस बात को सिद्ध करता है कि प्रत्येक भाषा का अपना एक विशिष्ट मुहवरा है उसे समझे बिना अनुवाद हास्यास्पद हो जाता है।

अनुवाद के क्षेत्र में ऐसे सटीक वैश्विक शब्दकोश निर्माण की आवश्यकता है जिसमें स्थान, संदर्भ, संवेदना आधार पर शब्दो के अर्थ संग्रहित हो जिनके आधार पर सफल अनुवाद किया जा सके। तकनीक इस कार्य में सहायक हो तो यह असंभव कार्य भी संभव है। भौतिक रूप से ऐसे कोष को हर समय अपने साथ रख पाना असंभव है किन्तु कम्प्यूटर की सूचना संग्रहण क्षमता इस कठिन कार्य को सरल बना देती है और बाहरी संरक्षित मैमरी यंत्र यानी एक्सटरनल स्टोरेज डिवाइस इस प्रकार के शब्द कोश को हर समय आसानी से उपलब्ध करा सकती है। इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में जो भाषा समस्त उपल्बध साहित्य को अनुदित करने की क्षमता पैदा कर पाएगी वही भाषा इस मशीनी युग में वैश्विक भाषा का दर्जा पाएगी।

ISBN: 978-81-954645-0-0

प्रौद्योगिकी के इस पल पल बदलते युग में वह भाषा ही जीवित रहेगी जो मशीनी भाषा की बराबरी कर सके और जो बाजार व व्यापार की भाषा बनने की क्षमता रखती हो। हिन्दी भाषा में यह क्षमता है और इसकी लिपी देवनागरी इसे संबल प्रदान करती है। वर्तमान में जब ''वायस टू टैक्स्ट'' एवं ''टैक्स्ट टू वायस'' जैसी सुविधा उपलब्ध है तब हिन्दी भाषा में एक फांट की जो वैश्विक रूप से मान्य हो की कमी इस कार्य में एक मात्र बाधा है।

हर पल बदलती तकनीक के इस युग में मनुष्य स्वयं को अचंभित करता है। अनुवाद भी केवल भाषातरण तक सीमित नहीं यह रूपातरण के साथ अधिक रोचक और उपयोगी सिद्ध हुआ है। हिन्दी के साहित्यकार सदैव प्रयासरत रहे कि किस प्रकार अन्य भाषाओं के ज्ञान को अनुदित कर अपने पाठक तक पंहुचाए। आधुनिक काल के जनक भारतेंदु हरिश्चंद ने जहां संस्कृत भाषा से अनुवाद किया वहीं अंग्रेजी भाषा के सुप्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर के नाटकों का सफल अनुवाद किया। कवि श्रीधर पाठक नेलेखक ऑलीवर गोल्डस्मिथ की तीन चर्चित रचनाओ ''हरमिट'' का ''एकांतवासी योगी'', ''डेजर्टेडविलेज'' का ''उजड़ग्राम'' तथा ''टरैवलर'' का ''श्रांत पथिक'' के रूप में सटीक हिन्दी अनुवाद किया । हिन्दी साहित्य में यह क्षमता रही है कि वह अपने अहिन्दी पाठकों को भी हिन्दी सीखनेपर विवश कर सकती है। आधुनिक काल के लेखक श्री देवकी नंदन खत्री जी की रचना ''चन्द्रकान्ता संतति''ऐसी ही एक रचना है। ज्ञान जहां,जैसे और जिस भाषा में उपलब्ध होगा वह अपना पाठक स्वयं तैयार कर लेता है। पाठकवर्ग तक पंहुचने के साधनरूप में विकसित प्रौद्योगिकी सहायक हो सकती हैं। आज जब साहित्यिक कृतियों का रूपान्तरण दृश्य रूप में उपलब्ध है तब अपनी भाषाई संस्कृति का प्रसार वैश्विक स्तर पर दिखाई दे रहा है। दूरदर्शन द्वारा प्रसारित

1. धारावाहिक ''एक कहानी'' श्रेष्ठ आधुनिक कहानीकारों की रचनाओं की दृश्य प्रस्तुति
2. उपन्यासों के रूपान्तरण में –प्रेमचन्द कृत ''निमर्ला'', ''गोदान' या ''तहरीर'' श्रंखला ' (भीष्म साहनी का ''तमस'') उशा प्रियम्वदा का ''पच्चपन खंबे लाल दीवारें'' (श्री लाल शुक्ल का ''रागदरबारी'' जैसी चर्चित रचनाओं की प्रस्तुति)
3. वर्तमान में राज्यसभा डी डी सौजन्य से हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय (ऐसे कुछ सराहनीय प्रयास हैं जो अहिन्दी भाषी दर्शक का भी मनोरंजन प्रदान करते हैं।

वैश्विक स्तर पर उपभोक्ता के रूप में उपलब्ध भारत सम्पूण विश्व को विवश करता है कि भारतीय सभ्यता व संस्कृतिक को पढ़ा,समझा जाए ।बाजारवाद में उपभोक्ता को लुभाने के विविध प्रयास कहीं न कहीं हिन्दी के प्रसार का साधन बनी है। दृश्य जगत की कोई भी प्रस्तुति यदि वैश्विक जन तक पंहुचानी है तो अनुवाद ही एक मात्र साधन हैा यही कारण है कि सिनेमा जगत में आज जब कोई कृति प्रस्तुत होती है तो विविध भाषाओं में उपलब्ध श्रव्य अनुवाद की आवश्यकता व अनिवार्यता के साथ यह इस बात की पुष्टि है कि उपभोक्ता तक पंहुचने का एक मात्र साधन अनुवाद ही हैं।

प्रौद्योगिकी के विकास ने आज अपनी अभिव्यक्ति के लिए अनेक मंच उपलब्ध करवाए हैं। सोश्ल मीडिया एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से हर वह व्यक्ति अपने विचार वैश्विक पटल पर सांझा कर सकता है जो उसे विश्व का महत्वपूर्ण इकाई बनाता है। यही कारण है कि वह विश्व के समस्त ज्ञान को पढ़ना समझना चाहता है। यद्यपि मशीनी अनुवाद एक विकल्प है किन्तु वह शाब्दिक अनुवाद ही उपलब्ध करवाता है जिससे उलझन ही पैदा होती है। ऐसी स्थिति में सजगअनुवादक और भाषा विज्ञानी ही सहायता कर सकता है।

कम्प्यूटर हम मनुष्यों के हाथ में एक ऐसा चिराग है जिससे हम अपनी लगभग हर मनोकामना एक स्थान पर बैठे हुए पूर्ण करवा सकते हैं।आज जीवन के हर क्षेत्र में यह जन साधारण के लिए अनिवार्य बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अनुवादक का कार्य ओर भी प्रासंगिक हो जाता है कि वह सही, सटीक और व्यवहार कुश्ल जानकारी उपलब्ध करवाए। कम्प्यूटर कीबोर्ड यानी कुंजीपटल की वह सुविधा जो मोबाइल या टैबलेट के उपभोक्ता को वर्चुअल कीबोर्ड केरूप में आसानी से उप्लब्ध है वही समान सुविधा यदि लैपटाप के कीबोर्ड में उपलब्ध हो जाए तो हिन्दी भाषा के उपभोक्ता उत्पादक के रूप में अपनी प्रस्तुति आसानी से दर्ज करवा पाएंगे।इस बाजारवाद की उपभोक्ता संस्कृति में जब तक मांग पैदा नहीं की जाएगी तबतक उसकी अपूर्ति असंभव है। जागरूक ग्राहक की भांति हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वाले जितनी शीघ्रता से इस बात को

मान कर यथा सामर्थ्यानुसार कार्य करेंगे उतनी तीव्रता से ही वे इस समस्या के समाधन पाने में सफल होंगे।

यह भी सत्य है कि भारतीय राजभाषा विभाग सीडैक पूना की प्रौद्योगिकी के सहयोग सें तथा वेश्विक स्तर पर विभिन्न सॉफटफेयर उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। कमी केवल यही है कि अंग्रेजी भाषा की भांति एक मानक सॉफटफेयर उपलब्ध न होने के कारण जब भी किसी विशिष्ट सॉफटफेयर के माध्यम से उसे भेजा जाता है तो उस विशिष्ट सॉफटफेयर की प्राप्तकर्ता के पास कमी के कारण कठिन संप्रेशण की स्थिति बनती है। यद्यपि विश्व अब हिन्दी भाषा को सीख रहा है कारण चाहे अपने सबसे बड़े उपभोक्ता के बारे में जानने की उत्कंठा ही रही हो। जब भी किसी ने किसी अन्य भाषा को सीखना चाहा है तो ''अनुवाद प्रकिया'' सबसे सरल, सहज और स्वाभाविक मार्ग है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा निर्मित ''लीला'', ''प्रबोध'', ''प्रवीण'' ऐसे ही कुछ साधन है जो अहिन्दी भाशियों की सहायतार्थ प्रस्तुत हैं।

हिन्दी भाषाविज्ञानी प्रौद्योगिकी के विकास क्रम में प्रयासरत एवं कृत संकल्प हैं कि रास्ते कठिन हैं पर मंजिल अवश्य पाएंगे। हिन्दी भाषा के प्रसार की राह अनुवाद का मूल मंत्र अपनाते हुए तो प्रशस्त करेंगें ही साथ में भारतीय आर्यभाषाओं के लिए विकास भूमि भी तैयार करेंगें।

मूल शब्द- अनुवाद, हिन्दी, भाषा, प्रौद्योगिकी, तकनीक, कम्प्यूटर,फॉन्ट,

संदर्भ सूचि-

1 ''अनुवाद विज्ञान''-भोलानाथ तिवारी।

2 ''राजभाषा हिन्दी और सूचना प्रौद्योगिकी''- नेहा रंजन, राज भाषा अधिकारी,
इण्डियन ओवरसीज बैंक क्षेत्रीय कार्यालय पटना के उपलब्ध लेख से।